साधकों का
मासिक प्रेरणा पत्र

वार्षिक शुल्क रु. 30/-
आजीवन शुल्क रु. 500/-

बुद्धवर्ष 2555, चैत्र पूर्णिमा, 6 अप्रेल 2012 वर्ष 41 अंक 10

For Patrika in various languages, visit: http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

पमादं अप्पमादेन, यदा नुदति पण्डितो।
पञ्ञापासादमारुय्ह, असोको सोकिनिं पजं।
पब्बतट्ठोव भूमट्ठे, धीरो बाले अवेक्खति॥

धम्मपद- २८, अप्पमादवग्गो

जब कोई समझदार व्यक्ति प्रमाद को अप्रमाद से परे धकेल देता (अर्थात, जीत लेता) है, तब वह प्रज्ञारूपी प्रासाद पर चढ़ा हुआ शोकरहित हो जाता है। (ऐसा) शोकरहित धीर (मनुष्य) शोकग्रस्त (विमूढ़) जनों को ऐसे ही (करुण भाव से) देखता है जैसे कि पर्वत पर खड़ा हुआ (कोई व्यक्ति) धरती पर खड़े हुए लोगों को देखे।

भगवान बुद्ध की सहिष्णुता और असीम करुणा

भगवान बुद्ध की सहिष्णुता हिमालय पर्वत के शिखर-सदृश थी, जिसे चाहे जितने तूफानों और झंझावातों का सामना करना पड़े, फिर भी वह सुदृढ़ और अचल बनी रहती थी। उनकी मैत्री और करुणा महासमुद्र के सदृश अगाध थी जिसमें से चाहे जितना जल निकले, परंतु इससे उसमें कोई कमी नहीं होती। भगवान के जीवनकाल में निंदा और अपशब्दों के कितने ही तूफान आये, परंतु उनकी सहिष्णुता सुदृढ़ बनी रही और निंदकों के प्रति असीम मैत्री में रंचमात्र भी कमी नहीं आयी।

(१) मगध के नागरिकों द्वारा निंदा- बुद्ध के भिक्षुओं को देख कर अनेक नागरिक बुद्ध के बारे में निंदा के ऐसे शब्द कहते थेः--

''यह श्रमण मगध देश को अपुत्रक बनाने पर उद्यत है। नारियों को विधवा बनाता जा रहा है। कुलनाश के लिए सन्नद्ध है। अभी-अभी इसने हजारों जटिल संन्यासियों को अपना शिष्य बनाया था। तदनंतर संजय-मतानुयायी साढ़े बारह सौ परिव्राजकों को भी अपने पंथ में मिला लिया। अब प्रसिद्ध-प्रसिद्ध मगधदेशवासी कुलपुत्र श्रमण गौतम की शिक्षा को स्वीकार करते जा रहे हैं।''

भिक्षुओं को उन्होंने ऐसे व्यंग्य वचन भी कहे -- 'यह महाश्रमण गौतम मागधों के गिरिव्रज (राजगृह) में आया है। इसने इतने लोगों को तो अपने चेले बना ही लिये, अब पता नहीं और किस-किस को चेला बनायगा!''

भगवान ने अपने भिक्षुओं के मुँह से ऐसी बातें सुनीं तो कहा - ''भिक्षुओ! ये व्यंग्य वचन तुम्हें बहुत अधिक दिनों तक सुनने को नहीं मिलेंगे। सप्ताह भर तक लोग कहते रहेंगे, फिर अपने आप चुप हो जायँगे।''

(२) सुप्रिय परिव्राजक द्वारा निंदा -- एक समय बुद्ध भिक्षुसंघ के साथ राजगीर से नालन्दा की ओर चारिका कर रहे थे। उस समय सुप्रिय परिव्राजक भी अपने शिष्य ब्रह्मदत्त माणव के साथ उनके पीछे-पीछे चल रहा था। सुप्रिय परिव्राजक बुद्ध, धर्म और संघ के बारे में रास्ते भर निंदा की ही बातें करता चला। परंतु उसका शिष्य ब्रह्मदत्त माणव बुद्ध, धर्म और संघ के बारे में नाना प्रकार से प्रशंसा ही करता चला। रास्ते में एक स्थान पर सब लोग रुके। वहां भी ये दोनों गुरु-शिष्य इसी प्रकार सारी रात निंदा और प्रशंसा में लगे रहे। रात भर भगवान का शिष्य-संघ उन दोनों का वार्तालाप सुनता रहा, पर उनके वाद-विवाद में नहीं पड़ा। भगवान ने इसे अच्छा बताया और कहा कि न किसी की प्रशंसा से प्रमुदित होना चाहिए और न ही निंदा से व्यथित।

(३) निग्रोध परिव्राजक द्वारा निंदा -- इसने बुद्ध की निंदा करते हुए कहा -- ''शून्यागार में रहते-रहते श्रमण गौतम की बुद्धि मारी गई है। उनकी प्रज्ञा भ्रष्ट हो गई है। भरी सभा में वे मेरे एक भी प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकेंगे।''

परंतु जब वह सचमुच भगवान से मिला तब उनकी शांति और प्रज्ञा देख कर नत-मस्तक हो गया।

(४) आक्रोशक ब्राह्मण द्वारा निंदा -- अत्यंत क्रुद्ध होकर वह भगवान के पास आया और उन्हें बहुत गालियां देने लगा।

यह सुन कर भगवान ने कहा, ''यह जो गालियां हैं इनको परस्पर खिलाना-पिलाना कहते हैं। मैं तुम्हारे साथ यह परस्पर खिलाने-पिलाने वाला काम नहीं करता। तुमने मुझे खिलाने के लिए गालियों का यह उपहार दिया। यह उपहार तुम्हारा ही है। मैंने तो इसे नहीं स्वीकार किया और न ही बदले में तुम्हें अपनी ओर से गालियों का कोई उपहार दिया। तुम्हारा उपहार तुम्हारे ही पास रहा।''

क्रोधी स्वभाव वाला होते हुए भी आक्रोशक भारद्वाज ब्राह्मण समझदार था। वह तत्काल समझ गया कि हम तो दिन-रात एक-दूसरे को गालियों का उपहार देते ही रहते हैं और देखो, यह कैसा व्यक्ति है जिसने गालियों का उपहार स्वीकार ही नहीं किया। बल्कि बदले में गालियां न देकर चुप्पी साध ली एवं सहिष्णुता के साथ नितांत शांत बना रहा। यह देखते-समझते हुए वह भगवान का श्रद्धालु अनुगामी बन गया।

(५) अग्गिक भारद्वाज द्वारा निंदा -- भगवान घर-घर भिक्षा मांगते हुए अग्गिक भारद्वाज ब्राह्मण के घर जा पहुँचे। अग्गिक भारद्वाज ने उन्हें देख कर दुत्कारते हुए कहा- ''ऐ मुंडक, वहीं ठहर! ऐ श्रमण, वहीं ठहर! ऐ वृषल, वहीं ठहर!'' वह नहीं चाहता था कि किसी वृषल यानी महाशूद्र की बुरी छाया उसके घर पर पड़े।

यह सुन कर भगवान ने भारद्वाज ब्राह्मण को समझाया कि वृषल कौन होता है और वृषलकारक कर्म कौन-से होते हैं। करुणामय भगवान के इस विवरण को सुन-समझ कर भारद्वाज

ब्राह्मण अत्यंत श्रद्धालु होकर उनका शिष्य हो गया।

(६) मागण्डिय परिव्राजक द्वारा निंदा -- जिस आसन पर बुद्ध बैठे थे, उसे देख कर मागण्डिय परिव्राजक ने कहा - ''अरे, मेरा इस आसन को देखना बहुत बुरा हुआ, क्योंकि श्रमण गौतम तो **'भूणहू'** है'' अर्थात भ्रूण का हत्यारा है। भगवान इस प्रकार के निंदा-वचनों से किंचित भी विचलित नहीं हुए।

(७) सिंह सेनापति द्वारा निंदा -- उसने उन पर एक बार यह लांछन लगाया कि उनके पास कोई अलौकिक शक्ति नहीं है। इस पर भगवान ने समझाया कि उनकी शिक्षा अलौकिक प्रदर्शन के लिए नहीं है, बल्कि दुःख के नितांत क्षय के लिए है। यह सुन-समझ कर वह भगवान का परम श्रद्धालु शिष्य बन गया।

(८) चिंचा माणविका द्वारा निंदा -- गर्भिणी का झूठा भेष बना कर चिंचा भरी धर्म-सभा में पहुँची और बुद्ध को अपशब्द कहने लगी-- ''ऐ महाश्रमण, मेरे पेट में तुम्हारे द्वारा दिया गया जो गर्भ है, उसके प्रसव की कोई व्यवस्था यदि तुम न कर सको तो अपने किसी धनी उपासक से कह कर करवाओ।'' यह झूठा वचन सुन कर भगवान ने शांत चित्त से कहा-- ''बहन, तुम्हारे इस कथन की सत्यता या असत्यता तुम भी जानती हो और मैं भी।'' यह सुन कर भी चिंचा बार-बार उस झूठे लांछन को दोहराती रही। लेकिन भगवान पर निंदा का कोई असर न होने पर वह घबरा उठी और उसके पेट पर लगे हुए काठ के टुकड़े को जिन रस्सियों से बाँध रखा था, वे ढीली पड़ गयीं, काठ का टुकड़ा नीचे आ गिरा और सच्चाई प्रकट हो गयी। उपस्थित लोगों ने उसे धिक्कारा। परंतु भगवान शांत ही रहे।

(९) सुंदरी परिव्राजिका द्वारा निंदा -- जब भगवान किसी प्रकार भी निंदित नहीं हुए तब उनके विरोधियों ने एक और चाल चली। सुंदरी परिव्राजिका नाम की एक साध्वी को जेतवन में ले जाकर, एकांत में उसकी हत्या कर दी। फिर उसके शव को उठा कर निंदा के ये शब्द प्रचारित करने लगे कि बुद्ध के श्रमण महाव्यभिचारी हैं और हत्यारे भी। यह कहते हुए मृत सुंदरी के शव को लेकर नगर में घूमने लगे। इस पर भगवान ने अपने भिक्षुओं को शांत रहने का निर्देश दिया और समझाया कि तुम पर लगाया गया यह असत्य आरोप एक सप्ताह से अधिक नहीं टिकेगा। यही हुआ। भिक्षु शांत रहे और समय पाकर सच्चाई सामने आयी।

(१०) सारिपुत्र पर मुक्के का प्रहार -- सारिपुत्र के बारे में यह प्रसिद्ध था कि कोई भी व्यक्ति किसी भी कारण से उन्हें क्रोधित नहीं कर सकता। एक विरोधी ब्राह्मण ने जब यह सुना तब जांचने के लिए उनकी पीठ पर पूरी शक्ति के साथ एक मुक्का मारा। सारिपुत्र को इस पर जरा भी क्रोध नहीं आया। ब्राह्मण ने समझा कि सचमुच यह अत्यंत सहिष्णुता-संपन्न व्यक्ति है। यह देख कर वह विनीत भाव से उनके चरणों में बैठ गया और यह प्रार्थना की कि आप आज मेरे घर तक चल कर मेरे द्वारा दी गई भिक्षा ग्रहण करें।

सारिपुत्र ने स्वीकार कर ऐसा ही किया। लोग देखते ही रह गये कि जिस व्यक्ति ने उन्हें इस कदर प्रताड़ित किया, उस पर क्रुद्ध न होकर, उसके प्रति करुणा का भाव लिये हुए उसकी याचना स्वीकार की और उसके घर भिक्षा लेने पधारे।

(११) अम्बट्ठ माणव द्वारा निंदा -- भगवान जहां ठहरे थे, वहां जाकर अम्बट्ठ माणव नामक युवक ने बुद्ध की निंदा करते हुए कहा, ''गौतम बुद्ध और उनके श्रमण पापी हैं।'' और फिर संपूर्ण शाक्य जाति की निंदा करते हुए कहा, 'वे चंडस्वभावी हैं, कटुभाषी हैं। वे ब्राह्मणों का न मान-सत्कार करते हैं और न उन्हें पूजते हैं। अतः पापी हैं।'' तदनंतर भगवान ने अत्यंत शांत वाणी में उसे समझाया कि वस्तुतः सम्मान-सत्कार किसका किया जाना चाहिए और वस्तुतः कौन पापी है। यह सुन कर अम्बट्ठ शांत और विनीत हुआ।

(१२) मागण्डिया द्वारा निंदा -- मागण्डिय ब्राह्मण की पुत्री मागण्डिया इतनी सुंदरी थी कि पिता उसके लिए उतने ही सुंदर वर की खोज कर रहा था। जब उसने अत्यंत सुंदर व्यक्तित्व वाले गौतम बुद्ध को देखा तब वह उसे अपनी पुत्री के लिए उचित वर लगा। उसने अपनी पत्नी को पुत्री के साथ वहां आने के लिए कहा। ब्राह्मण मागण्डिय ने बुद्ध को अपनी पुत्री के साथ विवाह का प्रस्ताव किया। बुद्ध ने तत्काल अस्वीकार कर दिया। ब्राह्मण द्वारा उसके रूप की प्रशंसा किये जाने पर भगवान ने कहा-- ''मैं इसे पत्नी कैसे स्वीकारूं? मैं तो इसे पांव से भी स्पर्श नहीं कर सकता।'' तत्पश्चात उन्होंने अपने बुद्धत्व प्राप्ति की सच्चाई समझायी। इसे सुन कर मागण्डिय और उसकी पत्नी दोनों ने बुद्ध की शरण ग्रहण की और आगे जाकर मुक्त अवस्था प्राप्त की।

बुद्ध द्वारा उसे अस्वीकार किये जाने पर मागण्डिया को मर्मांतक चोट लगी। आगे जाकर अत्यंत सुंदरी होने के कारण उसका विवाह कोसांबी के राजा उदयन से हो गया। वह महारानी बनी। परंतु बुद्ध द्वारा अपमानित होने की पीड़ा उसे सालती रही। एक बार गौतम बुद्ध आनंद के साथ उस नगर में आये। उन्हें देख कर उसने अपने महल के दासों और कर्मचारियों को आदेश दिया कि वे बुद्ध के पीछे लग कर उन्हें ऐसी-ऐसी गालियां दें-- ''श्रमण गौतम तू चोर है! मूर्ख है! अविवेकी है! ऊंट है! बैल है! गधा है! पशु है! नरकगामी जीव है! तुम्हारी सुगति नहीं होगी! दुर्गति ही होगी!''

ऐसे अपशब्दों से वे लोग भगवान को अपमानित करने लगे। तब आयुष्मान आनंद ने शास्ता से कहा -- ''भंते, ये अभद्र नागरिक आपको अपशब्द कह रहे हैं। अतः हम क्यों न दूसरे नगर में चले चलें। इस पर शास्ता ने कहा -- ''वहां के लोग भी यदि ऐसे ही अपशब्द कहने लगेंगे तो फिर कहां चलेंगे?''

शास्ता ने फिर समझाया-- आनंद, मैं तो संग्राम में उतरे हुए हाथी के समान हूं। संग्राम में जूझते हुए हाथी को जैसे चारों ओर से लगते हुए वाणों को सहन करना पड़ता है, वैसे ही बहुत से दुःशील लोगों द्वारा कहे गये अपशब्दों को सहन करना मेरा कर्तव्य है। जैसे प्रशंसा होती है वैसे ही निंदा भी होती ही है। दोनों में समरस रहना ही धर्म है।

इस प्रकार बुद्ध के जीवनकाल में अनेक बार अनेक प्रकार से उनकी निंदा की गयी। परंतु बुद्ध 'बुद्ध' थे। वे इन निंदाओं से कैसे विचलित होते! उनकी सहिष्णुता हिमालय के शिखर के समान सुदृढ़ थी। उनकी ओर से तो निंदकों के प्रति सदैव मंगल मैत्री ही प्रकट होती थी जो कि अगाध सागर की तरह असीम थी।

निंदा अधिकतर ऐसे लोगों द्वारा होती थी जो कि भगवान की प्रसिद्धि और उनकी शिक्षा का विकास नहीं सहन कर पाते थे। वे चाहते थे कि किसी न किसी प्रकार बुद्ध की बदनामी करें ताकि उनकी शिक्षा विकसित न होने पाये।

इसके अतिरिक्त देवदत्त जैसे व्यक्ति ने भी भगवान बुद्ध की घोर निंदा की, क्योंकि वह उनके गौरवमय स्थान को प्राप्त करने के लिए आतुर था। परंतु भगवान उसके प्रति भी मैत्रीभाव ही रखते थे। एक बार वह भगवान और उनकी शिक्षा के बारे में उल्टी-सीधी बातें फैला कर, अपनी झूठी महत्ता स्थापित करके, भगवान के भिक्षुसंघ में से पांच सौ भिक्षुओं को अपनी ओर खींच कर ले गया। वह चाहता था कि भगवान के भिक्षुसंघ का विघटन

करके अपने लिए एक अलग भिक्षुसंघ स्थापित करे। परंतु वह अपनी इस दुष्प्रवृत्ति में सफल नहीं हुआ।

तब उसने सोचा कि देश का राजा बुद्ध का गहरा भक्त है। उसके रहते मेरे हजार प्रयत्न करने पर भी बुद्ध की यश-कीर्ति में जरा भी आंच नहीं आ सकती। अतः उसके मन में यह दुष्ट विचार आया कि वह राजकुमार अजातशत्रु को अपने वश में कर ले ताकि उसके माध्यम से अपनी मनोकामनाएं पूरी कर सके।

उसने ऐसा ही किया। कुछ चमत्कारों का प्रदर्शन करके अजातशत्रु को अभिभूत कर दिया। फिर उसे समझाया कि तुम्हारा पिता बिम्बिसार बहुत लंबे समय तक जीवित रहेगा। तब तक तुम्हें राजसुख का अवसर ही नहीं मिलेगा। अतः उसकी हत्या कर दो और स्वयं राजगद्दी पर बैठ जाओ।

अजातशत्रु अपने पिता राजा बिम्बिसार की हत्या करने के लिए उद्यत हुआ। परंतु असफल रहा। राजा को अपने पुत्र पर दया आयी कि उसे राजगद्दी प्राप्त करने की प्रबल कामना है। अतः उसने स्वतः प्रेमपूर्वक राजगद्दी त्याग दी और पुत्र अजातशत्रु को देश का शासक बना दिया।

देवदत्त को इससे भी संतोष नहीं हुआ, क्योंकि राजा नहीं रहने पर भी बिम्बिसार पर प्रजा की असीम श्रद्धा थी। यद्यपि वह उसे मरवा नहीं सका तब भी किसी षडयंत्र द्वारा पुत्र ने अपने पिता को जेल में बंद करवा दिया और वहां भूखे मार कर उसकी मृत्यु करवायी।

देवदत्त प्रसन्न हुआ, ''सैंया भये कोतवाल, अब डर काहे का'' -- इस दृष्टिकोण से उसने बुद्ध की हत्या के अनेक प्रयत्न किये, पर सफल नहीं हुआ। बुद्ध उसके कुकृत्यों के प्रति हिमालय की भांति अविचल रहे। उनकी मैत्री अजस्र, अगाध बनी रही।

ये प्रसंग बुद्ध के इन दोनों गुणों के ज्वलंत उदाहरण हैं।

देवदत्त ने एक बार चंड नालागिरि हाथी को जो सेवकों द्वारा मदिरा पिला कर क्रुद्ध किया गया था और चिंघाड़ रहा था उस रास्ते पर छुड़वा दिया जिस पर बुद्ध भिक्षाटन के लिए निकले थे। भिक्षु साधकों ने समीप के किसी घर में सुरक्षा के लिए प्रवेश करने की भगवान से प्रार्थना की, परंतु वे नितांत अविचलित रहे। चिंघाड़ता हुआ हाथी समीप आता गया। भगवान की मैत्री की वर्षा उस पर होती गयी। उसके फलस्वरूप उसका क्रोध ही दूर नहीं हो गया बल्कि वह भगवान के समीप आकर आदरपूर्वक घुटने टेक कर उन्हें नमस्कार करने लगा। भगवान ने असीम मैत्री के साथ उसके कुंभ पर प्यार का हाथ फेरा और वह गद्‌गद हो उठा। वह वापस लौटा तो बुद्ध की ओर पीठ करके नहीं, बल्कि उनके मुख को देखते हुए, उन्हें प्रणाम करते हुए उल्टे पांव सारे रास्ते चल कर लौट गया।

ऐसी थी भगवान की अविचल सहिष्णुता और ऐसी थी भगवान की अगाध मैत्री!

भगवान के जीवन की उपरोक्त घटनाओं से हमें शिक्षा और प्रेरणा लेनी चाहिए। कोई हमारी हजार निंदा करे और उस निंदा में यदि सत्य हो तो तत्काल अपने आपको सुधारें। अन्यथा घोर से घोर निंदा से अविचलित रहते हुए निंदकों के प्रति यथाशक्ति मंगल मैत्री का ही प्रसारण करें।

आज के तथा भविष्य के धर्माचार्यों को यह ध्यान में रखना चाहिए कि कोई भी देवदत्त किसी विशिष्ट स्थिति को प्राप्त होने पर उसे कायम रखने के लिए अथवा न प्राप्त होने पर उसे प्राप्त करने के लिए कोई भी दुष्कर्म करे, परंतु साधक इससे जरा भी विचलित न हों। न किसी राजकीय शक्ति से भयभीत हों और न ही किसी धनी व्यक्ति से प्रभावित होकर विचलित हों। सहिष्णुता बनी रहे। धैर्य बना रहे और मंगल मैत्री का ही उद्‌बोधन होता रहे।

यही धर्म का संदेश है। यही करणीय है। इसी में सबका मंगल समाया हुआ है! सबका कल्याण समाया हुआ है!!

कल्याणमित्र,
सत्यनारायण गोयन्का

आत्म-दर्शन में मेल-मिलाप कार्यक्रम

अंधेरी (पूर्व), मुंबई में आत्म-दर्शन नामक ईसाइयों की एक आध्यात्मिक संस्था है जिसमें नियमित रूपसे विपश्यना के दस-दिवसीय शिविर लगते रहते हैं। यहां आगामी २८ अप्रेल, शनिवार प्रातः ९ बजे से दोपहर १:३० बजे तक आपसी **मेल-मिलाप** का कार्यक्रम निश्चित हुआ है जिसमें साधक पादरी और साध्वियों के अतिरिक्त अन्य ईसाई साधक भी भाग ले सकेंगे। इस कार्यक्रम के अंत में पूज्य गुरुदेव के प्रवचन (UNO's Eng. Talk) की विडियो रेकार्डिंग भी दिखायी जायगी। सुबह का नाश्ता और दोपहर का भोजन सर्व किया जायगा। कृपया निम्न पते पर संपर्क करके सुव्यवस्था हेतु अपनी बुकिंग अवश्य करायें। **संपर्क**-- Sr. Regina, Atma Darshan. Phone: 022- 2836- 3120, 2824-2419. Email: tonysvd@rediffmail.com

---

धम्मकेतन, केरल विपश्यना केंद्र - सूचना

धम्मकेतन, केरल विपश्यना केंद्र के आगामी सभी कार्यक्रम फिलहाल कुछ समय के लिए स्थगित कर दिये गये हैं तथा विपश्यना के स्थानीय सहायक आचार्य श्री बी. रवींद्रन, श्री जॉन जैकब एवं डॉ. के. सेथु कहीं भी विपश्यना शिविर-संचालन का काम नहीं कर सकेंगे।

वर्ष २०१२ में सघन पालि प्रशिक्षण कार्यक्रम

विपश्यना विशोधन विन्यास ने इस वर्ष एक महीने तथा तीन महीने के निवासीय (मुंबई के बाहर से आने वालों के लिए) **ग्लोबल विपश्यना पगोडा परिसर, गोराई, मुंबई** में पालि प्रशिक्षण शिविर की विशेष व्यवस्था की है। इनके लिए निर्धारित प्रवेश योग्यताएं निम्न प्रकार हैं-- (क्रमशः अगले पृष्ठ पर ..)

नये उत्तरदायित्व

आचार्य

१. श्री दिगंबर धांडे, मुंबई

वरिष्ठ सहायक आचार्य

१. श्री बालकृष्ण पंतावने, नवी मुंबई
२. श्रीमती वी. पद्मिनी, चेन्नई
3-4. Mr. Roger Foxius & Mrs. Ineke Sommer, (The Netherlands)
5. Mrs. Eva Dieterman, The Netherlands.
6. Ms. Marieke Landuijt, The Netherlands

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

१. श्री अरुण ढोलकिया, भुज
२. डॉ. पवन गुडा, हैदराबाद
३. श्री नारायण ओ. पाटील, धुळे
4. Mrs. Darunee Sumonmitr, Thailand
5. Mrs. Selina Meghji-Kuoni, Canada

बालशिविर शिक्षक

१. श्री सुमित तन्ना, पुणे
२. कु. आरती सग्गर, पुणे
३. श्रीमती वर्षा पाटिल, पुणे
४. श्री हरेशकुमार तिलवानी, जूनागढ़ (गुजरात)
५. श्री वल्लभभाई लक्कड, राजकोट
६. श्री वीरेंद्र वेगडा, राजकोट
७-८. श्री हरीश एवं. श्रीमती उमा तिवारी, दिल्ली
९-१०. श्री रमेश एवं श्रीमती सुनीता गौतम, नोएडा
११. श्रीमती सविता श्रीवास्तव, गाजियाबाद
१२. श्रीमती मधु प्रीत, पंचकुला, हरियाणा
१३. श्रीमती अनीता गर्ग, पंचकुला, हरियाणा
१४. श्रीमती वंदना त्रिपाठी, पंचकुला, हरियाणा
१५. श्री उग्येन टेंजिन, चेन्नई
16. Mr Rezso Szaday Hungary
17. Ms Patricia Hungary

Registered No. NSK/235/2012-2014

WPP Postal License No. AR/Techno/WPP-05/2012-2014

वे साधक जिन्होंने -- १. कम से कम **तीन १०-दिवसीय** शिविर तथा **एक सतिपट्ठान-** शिविर किये हों।

२. एक वर्ष से नियमितरूप से दो घंटे की दैनिक साधना करते हों।

३. एक वर्ष से पंचशील का कड़ाई से पालन कर रहे हों।

४. कम से कम १२वीं कक्षा पास होने का प्रमाण-पत्र साथ हो।

एक महीने का शिविर २० मई से १९ जून, २०१२ तक चलेगा।

तीन महीने का शिविर १ जुलाई से ३० सितंबर २०१२ तक चलेगा।

आवेदन-पत्र जमा करने की अंतिम तिथि-

१ मई, २०१२ (पालि-हिंदी के लिए) तथा

३० मई, २०१२ (पालि-अंग्रेजी के लिए).

क्षेत्रीय आचार्य अथवा समीपवर्ती वरिष्ठ सहायक आचार्य की संतुस्ति से ही आवेदन-पत्र स्वीकार्य होगा।

अधिक जानकारी अथवा **ईमेल** से आवेदन करने के लिए **संपर्क** -- डॉ. (श्रीमती) शारदाबेन संघवी, ईमेल-- s_sanghvi@hotmail.com; or priti.dedhia@gmail.com; **पत्राचार संपर्क-** श्री शशिकांत संघवी, द्वारा-- रूपमिलन, ९७-ए, अडेना बिल्डिंग, महर्षि कर्वे मार्ग, मरीन लाइन्स, मुंबई-४०००२०. ऑनलाइन आवेदन तथा वेबसाइट से फार्म डाउनलोड करने के लिए -- website: www.vridhamma.org; www.globalpagoda.org

---

भारतरत्न डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के १२१वें जन्मोत्सव पर बृहत आयोजन

आगामी **१५ अप्रेल, रविवार** को भारतरत्न डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के १२१वें जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में **विश्व विपश्यना पगोडा में** दो घंटे तक (दोपहर ११ से १ बजे) **पूज्य गुरुदेव** की उपस्थिति में **बृहत मिनी आनापान शिविर** का आयोजन किया गया है। **सभी श्रद्धालुजन** इसमें भाग लेने के लिए सादर आमंत्रित हैं।

बुकिंग संपर्क: (ग्लोबल पगोडा के नीचे दिये गये फोन व संपर्क पते पर)

बुद्धपूर्णिमा पर 'ग्लोबल पगोडा' में पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में एक दिवसीय महाशिविर

६ मई, २०१२, **रविवार**, **समयः** प्रातः ११ बजे से अपराह्न ४ बजे तक, **'ग्लोबल विपश्यना पगोडा'** के बड़े धम्मकक्ष (डोम) में। कृपया ध्यान दें कि इस विशाल शिविर में आपको किसी प्रकार की असुविधा न हो, इसलिए **बिना बुकिंग कराये न आएं। बुकिंग संपर्क** : **मो.** 09892855692, 09892855945, **फोन नं.**: 022-28451170, 33747543, 33747544, **(फोन बुकिंग** : प्रातः **११** से सायं **५** तक, प्रतिदिन)

ईमेल Registration: oneday@globalpagoda.org

Online Registration: www.vridhamma.org

दोहे धर्म के

कड़वी वाणी बोल कर, सधे न कोई काम।
बैर बढ़े विग्रह बढ़े, जिह्वा राख लगाम॥
मानस को मैला किया, बोले तीते बोल।
सरल स्वच्छ कर विमल कर, पुनः धरम रस घोल॥
कोई बैरी सदृश हो, करे घोर अपकार।
तो भी मन मैत्री कहे, करूं भले प्रतिकार॥
रहूं बैरियों में मगर, चित्त बैर ना होय।
सबका ही चाहूं भला, सच्चा मंगल होय॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा०) लिमिटेड

८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोनः 2493 8893, फैक्सः 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

क्रोध कर्यां जिवड़ो जळ्यो, आंख्यां होग्यी लाल।
कीं रो के बिगड़्यो? हुयो, अपणो ही बदहाल॥
भलो बुरो सूझै नहीं, क्रोध चढायो सीस।
दो आंख्यां होता-सुतां, आंधो बिस्वाबीस॥
गाळी दी, मार्‌यो मनै, लियो हाय सब लूट।
जद तक यूं चिंतन करै, बैर सकै ना छूट॥
गाळी दी, मार्‌यो मनै, लियो हाय सब लूट।
ज्यूं ही यो चिंतन छुट्‌यो, बैर गयो सब छूट॥
दुरजनता स्यूं द्वेस कर, कर दुरजन स्यूं प्यार।
अपणै चित्त रै प्यार स्यूं, दुरजन चित्त सुधार॥

एक साधक

की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादकः राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-422 403, दूरभाष : (02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, 69- बी रोड, सातपुर, नाशिक-422 007. **बुद्धवर्ष** 2555, **चैत्र पूर्णिमा, 6 अप्रेल, 2012**

वार्षिक शुल्क रु. **30/-,** US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. **500/-,** US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. 19156/71. Registered No. NSK/235/2012-2014**

WPP Postal Licence No. AR/Techno/WPP-05/2012-2014
Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086, 243712,
243238. **फैक्स** : (02553) 244176
Email: info@giri.dhamma.org
Website: www.vridhamma.org